॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥
॥ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ॥
॥ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासाय नमः ॥

स्वामी ब्रह्मदास कृत

॥ रामप्रतापवर्णनम् ॥

This text has been prepared by Vishal Pandey (B.Tech IIT Kanpur) with the blessings of

Chitrakūṭa Tulasīpīṭhādhiśvara Jagadguru Rāmānandāchārya Śrī Svāmī Rāmabhadrāchārya

॥ अथ रामप्रतापवर्णनम् ॥

रामस्त्वद्भुजदण्डडिंडिमचमत्कारः प्रतापानलः
ज्वाला जर्जरकीर्तिपारदघटीविस्फोटितबिन्दवः ।
भोगीन्द्राः कतितारका कति कति क्षीराब्धयः कान्यपि
प्रालेयाचलपाञ्चजन्यकरकाः कर्पूरकुन्दं तथा ॥

हे राम ! आपके भुजदण्ड का चमत्कारपूर्ण डिमडिम घोष जो सर्वत्र व्याप्त हो रहा है, उसके प्रताप रूपी अग्नि की ज्वाला से कीति-स्वरूपी पारदवटी जर्जर होकर फूट गयी है (पारा अग्नि के संसर्ग से उड़ जाता है, अतः यहां कीर्ति को पारद वटी की उपमा दी गई जो प्रभु के प्रतापानल की ज्वाला की गरमी से फूट कर सर्वत्र उड़ने लगी है।) उसके बिन्दु चारों ओर त्रिभुवन में उड़कर व्याप्त हो गये हैं, उससे न जाने कितने तो श्वेत भोगीन्द्र, कितने ही तारागण, कितने-कितने क्षीर समुद्र, कितने ही प्रलय में भी अविचल रहने वाले पर्वतराज, कितने ही कर्पूर-कन्द तथा कितने ही पाञ्चजन्य के समान श्वेत सुन्दर शंख धारण करने वाले स्वरूप प्रकाशित हो रहे हैं ॥

O Rāma ! The wondrous drum-like resonance of your mighty arm, which pervades everywhere, blazes forth as the fire of your valor. By the flame of that fire, the

vessel of glory — likened to one of quicksilver — is shattered, for just as mercury bursts and scatters on contact with fire, so too you're your glory disintegrate by the heat of your blazing might. Its countless drops are dispersed in every direction, filling the three worlds. From that radiance are manifested innumerable forms: countless white serpent-lords, countless stars, countless oceans of milk, countless lofty mountains that remain unmoved even at the time of dissolution, countless camphor-blossoms, and countless shining forms bearing in their hands conches as beautiful and white as the Pāñcajanya.

अत्युक्तौ परितप्त कुप्यति मृषावादं न वेन्मन्यसे
तद्भूमोऽद्भुतकीर्तनेन रसना केषां न कण्डूयते ।
राम ! त्वन्नरुणप्रतापदहनज्वालावलीशोषिता
सर्वे वारिधयस्तवरिपुवधूनेत्राम्बुभिः पूरिताः ॥

अतिशयोक्ति कहने से तो वाणी कुपित ही होती है, झूठमूठ बोलना तो किसी को पसन्द ही नहीं है, यह तो आपका सुयश ही ऐसा है जिसका वर्णन करने के लिए किनकी जीभ सुगबुगाती खुजलाती नहीं है ? अर्थात आपका गुणगान कौन नहीं करना चाहता है ? हे

राम ! सच्ची बात तो यह है कि आपके प्रताप की लाली ने ऐसा प्रभाव दिखाया है कि सभी समुद्र उसकी ज्वालमाला से सूख गये, ये जो पुनः भरे हुए सागर दीखते हैं, वे तो आपके शत्रुओं की ललनाओं के रुदन से जो आसुओं की धाराएं बहने लगी उससे पुनः भर गये हैं ।

Exaggeration in speech may arouse anger, and no one delights in falsehood; yet your glory, **O Rāma**, is of such a kind that whose tongue does not itch and quiver to sing of it? In truth, who does not long to praise your virtues? Indeed, the simple truth is this: the crimson radiance of your valor had such an effect that all the oceans were dried up by its fiery garland of flames. And these seas, which now appear refilled, are not filled with their own waters, but with the torrents of tears shed by the maidens of your vanquished enemies.

खद्योतद्युतिमातनोति सचिता जीर्णोर्णनामालवः
छायायामयते शशीमशकतामायाति कारादयः ।
इत्थं वर्णयतो नभस्त्वद्यशो यातं स्मृतेर्गोचरं
तच्चास्मि भ्रमरायते रघुपते वाचस्ततो मुद्रिता ॥

हे श्रीरघुनाथ जी ! आपके यश के आगे सूर्यनारायण खद्योत (जुगनु) के समान लगने लगे और सब ग्रह भी जीर्ण-शीर्ण से दिखने लगे। चन्द्रमा तो मच्छर जैसा बन गया और नित्य प्रति घटता-बढता रहता है, इस प्रकार के आपके सुयश का वर्णन करते-करते आकाश भी अन्तर्ध्यान हो गया, अभी तक किसी को दिखता नहीं है, केवल उसकी स्मृति मात्र रह गयी है। इसलिये आपके ऐसे दिव्य सुयश का गान करने के लिये मेरी वाणी भी मेरे हृदय मन्दिर में बन्द हो गयी है, अर्थात् बोलना तो चाहती है, परन्तु अपनी असमर्थता से विवश है ॥

O Śrī Raghunātha ! Before the brilliance of your fame, even the sun himself appears like a mere firefly, and all the planets seem worn and withered. The moon has become like a mosquito, forever waxing and waning. As the glories of your renown are sung, even the sky itself has vanished from sight; it is no longer visible, leaving behind only the memory of what once was. Therefore, to sing of such divine glory of yours, my speech too has shut itself within the temple of my heart. It longs to speak, yet constrained by its own inadequacy, it stands powerless and silent.

कृत्वामेरुमुलूखलं रघुपते वृन्देन दिग्योषितां
स्वर्गङ्गामुशलेन क्षालयदिव त्वत्कीर्तयः खण्डिताः ।
तासां राशिरसौ तुषारशिखरो तारागणास्तत्कणाः
प्रोद्यत्पूर्णसुधांशुबिम्बमसृणज्ज्योत्स्नाश्च तत्पांशवः ॥

आपकी कीर्ति देवताओं की कीर्ति से अत्यन्त श्रेष्ठ हो गयी, इसलिये ईर्ष्यालु स्वभाव के वशीभूत होकर देवाङ्गनायें उसको सुमेरु पहाड़ को ओखली और स्वर्गंगा का मूसल बना कर कूटने लगीं, परन्तु आपकी कीर्ति के जो टुकड़े-टुकड़े हो गये, उन खण्डित कीर्ति के टुकड़ों का जो ढेर लग गया और वहीं श्वेत हिम शिखरों से सुशोभित हिमालय बन गया और इधर-उधर जो उसके टुकड़े उड़े वे सब आकाश के तारा बन गये । आकाश में भी उसकी ज्योति के जो रज कण सिमट कर इकट्ठा हो गये वह चन्द्रमा बन गया जो अमृत का निधान है, हे राम ! आपकी यह अजर अमर कीर्ति धन्य है ॥

O Rāma ! Your glory surpassed even that of the gods. Envious by nature, the celestial maidens, overcome by jealousy, sought to pound it down — using Mount Sumeru as the mortar and the heavenly Gaṅgā as the pestle. Yet when your glory was broken into fragments, the pieces themselves became

wonders. The great heap of those shattered fragments rose up as the Himalaya, adorned with its white snowy peaks. The scattered bits that flew about turned into the stars shining across the sky. And the very particles of radiance that gathered together in the heavens formed the moon, the repository of nectar. Blessed indeed, **O Rāma**, is this undying, immortal glory of yours!

समुद्गतौ यत्समकालमेव यशः प्रतापौ तव पुण्यवन्तौ ।
रामारिवाणश्च मदश्च शेषः त्वत्खड्गतीर्थं तदनिष्टशान्त्यै ॥

हे राम ! आपका यश और महान पुण्य स्वरूप आपका प्रताप दोनों जब एक ही समय प्रकट हुए तब आपके शत्रुओं के बाण तथा उनका अहंकार दोनों अपने अनिष्ट की शान्ति के लिये आपके खड्गरूपी तीर्थ में अपना शरीर छोड़कर पावन बन गये । अर्थात् आपके सुयश के आगे उनका अहंकार तथा आपके प्रताप के आगे उनके बाण अस्त्र-शस्त्र सब व्यर्थ हो गये; शत्रु भी आपके शरणागत हो गये ॥

O Rāma ! When your fame and your great meritorious valor manifested together, then both the arrows of your enemies and their

pride alike sought relief from their misfortune by surrendering themselves into the holy sanctuary of your sword. Thus, in abandoning their bodies there, they too became sanctified. That is to say, before the brilliance of your renown their arrogance perished, and before the force of your valor their weapons proved useless. Even your enemies, subdued, took refuge in you.

कैलाशेनिलयस्तुषारशिखरी विन्दिर्गिरीशः सखा
स्वर्गङ्गा गृहदीर्घिका हिमरविश्चन्द्रोपलोदर्पणः ।
क्षीणार्चीनवपूर्तकं किमपरं शेषस्तु शेषस्त्विषः
यस्या स्यादिह राघवक्षितिपते कीर्तेस्तटाकस्तव ॥

हे राघवेन्द्र प्रभो ! हे पृथ्वीनाथ ! आपकी कीर्ति के प्रताप को देखकर हिमालय ने कैलाश में आश्रय लिया, पर्वतराज का सखा हुआ, आकाश गंगा अपने घर में (शंकर जी की जटा में) छिप गयी । सूर्य शीतल पड़ गये, चन्द्रमा पत्थर के दर्पण के रूप में हो गये । अग्निदेव का तेज क्षीण हो गया, शेष जी की किरणें भी निःशेष समाप्त हो गयीं, ऐसी आपकी कीर्ति का प्रभाव है ॥

O Lord Rāghavendra, O Protector of the Earth ! Beholding the power of your glory,

the Himalaya sought shelter in Kailāsa and became the companion of the Mountain-Lord. The heavenly Gaṅgā concealed herself in her own abode, the matted locks of Śiva. The sun grew cool, the moon became like a mirror of stone. The brilliance of the Fire-god was diminished, and even the radiance of Śeṣa was entirely extinguished. Such is the overwhelming effect of your glory !

इति श्रीब्रह्मदासकृतं श्रीरामप्रतापवर्णनं सम्पूर्णम् ॥